E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

किरातार्जुनीयम् की भाषा शैली

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

महाकवि भारवि वर्ण्य-विषय को सजीव रूप में प्रस्तुत करने में प्रति कुशल है। कवि की भाषा में दीर्घ समास नहीं हैं। अर्थगौरवयुक्त किन्तु कोमलकान्त पदावली का प्रयोग हुआ है। पात्रों तथा विषय के अनुकूल हृदयग्राही शब्द-योजना है। वर्णनशैली अत्यन्त उदात्त एवं सरस है। सामान्यतः प्रसादगुण विशिष्ट होने से भाषा में प्रवाहमयता विद्यमान है। यद्यपि, भारवि में कालिदास की प्रसादमयता नहीं है तथा माघ सदृश विकट समासान्त पदावली का भी प्रभाव है।

कवि में गुणों की स्थिति वर्णनीय विषय के अनुरूप है। वीररस के निरूपण में ओजगुण की ओजस्विता पाठक को उद्दीप्त करने वाली है तथा शृंगार रस के चित्रण में सहृदयों को आह्लाद प्रदान करने वाले माधुर्यगुण का संनिवेश हुआ है। भारवि की काव्यशैली का निर्धारण सरल नहीं है, तथापि वैदर्भी रीति स्वीकार करना अधिक समीचीन है। किन्तु कवि की वैदर्भी रीति भी कालिदास की लालित्यमयी वैदर्भी नहीं है, फिर भी इसको गौडी नहीं कहा जा सकता। इसकी परिगणना दोनों रीतियों के मध्य में की जानी चाहिए।

इस प्रकार वर्णनीय विषय के अनुरूप ही भारवि ने गुणों तथा रीतियों का प्रयोग किया है। ऐसे स्थलों में पर्याप्त सरलता प्रस्फुटित हुई है, जहाँ कहीं लघु समासों का प्रयोग हुआ है। यथा दुर्योधन के प्रति प्रजाजनों की राजभक्ति का बहुत ही सुबोध वर्णन प्रस्तुत किया गया है-

महौजसो मानधनार्चिता धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।

नसंहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समोहितम्।।

यद्यपि कालिदास की तरह सुश्लिष्ट पदविन्यासवाली, प्रसादमयी हृदयावर्जक पदावली का भारवि में अभाव है, किंतु अर्थगरिमामयी पदावली की इनमें बहुलता है। इसी तरह कल्पना समृद्धि,

भावों की कोमलता तथा छन्दों की लयात्मक मधुरिमा में निश्चित रूप से कालिदास अद्वितीय हैं, तो भावों की ओजस्विता युक्त अभिव्यञ्जना में भारवि भी अपनी समता नहीं रखते। कालिदास में भावपक्ष तथा कलापक्ष दोनों का मनोरम समन्वय है और भावपक्ष की प्रधानता है। इसके विपरीत भारवि में कला पक्ष की प्रधानता है। भट्ट, माघ, श्रीहर्ष इत्यादि उत्तरकालीन कलावादी कवियों में भारवि का अत्यन्त श्लाघनीय स्थान है।

अपनी सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि द्वारा भारवि ने वर्णनीय विषय का प्रसंगानुकूल रुचिकर चित्र प्रस्तुत किया है। यह वर्णन सर्वाङ्गपूर्ण एवं विशद है। सामान्य विषय के निरूपण में भी कवि ने पूर्ण रुचि ली है और उस चित्र को अत्यन्त मनोरम बनाया है। द्रौपदी तथा भीमसेन के ओजस्वी भावों, युधिष्ठिर की नीतिपरायण शमप्रधान वृत्ति, अप्सराओं की कामकेलि, अर्जुन की तपश्चर्या तथा किरात के साथ युद्ध, ऋतुओं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य इत्यादि विषयों का कवि ने प्रभाव एवं सरस चित्रण किया है। सर्वत्र कवि का वर्णन-कौशल तथा शब्दविलास दर्शनीय है।

अत्यन्त तृषार्त अंशुमाली सूर्य ने रश्मिजाल रूपने करों द्वारा मकरन्दों की मधु को उन्मत्त होकर पान कर लिया है और वह अरुण वर्ण का हो गया है। अगामी सूर्य-सुषमा की कवि ने सुन्दर रूप में उत्प्रेक्षा की है-

अंशुपाणिभिरतीव पिपासुः पद्मजं मधु भृशं रसयित्वा।
क्षीबतामिव गतः क्षितिमेष्यंल्लोहितं वपुरुवाह पतङ्गः।।

सौम्य मुनि की कल्पना के अनुरूप ही महामुनि व्यास को कवि ने अपनी शब्दशक्ति द्वारा साक्षात् प्रकट कर दिया है। आसनस्थ भगवान् व्यास के शरीर से प्रस्फुटित तेजोराशि ऊपर की ओर प्रसार प्राप्त कर रही है। उनका वर्ण ईषत् नील है। शिर पर पीतवर्ण की जटाएँ सुशोभित हो रही हैं। शरत्कालीन चन्द्र के समान उनका स्वरूप बहुत ही आह्लादक है। विद्युत् युक्त श्याम मेघ के सदृश कवि ने व्यास के सुरम्य मनोहर चित्र को प्रस्तुत किया है-

ततः शरच्चन्द्रकराभिरामैरुत्सर्पिभिः प्रांशुमिवांशुजालैः।

विभ्राणमानीलरुचं पिशङ्गीजास्तडित्वन्तमिवाम्बुवाहम्।।

इसके विपरीत युद्धभूमि में बाणों की वर्षा से शत्रुसमूह को विनष्ट करने वाले द्रोणाचार्य मूर्तिमान् क्रोध के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं, जो अपनी प्रचण्ड ज्वाला से समस्त संसार को भस्म कर देने वाली प्रलयकालीन अग्नि के समान है-

सृजन्तमाजाविषुसंहतीर्वः सहेत कोपज्वलितं गुरुं कः।

परिस्फुरल्लोलशिखाऽग्रजिह्वं जगज्जिघत्सन्तमिवान्तवह्निम्।।

जल विहार करती हुई सुरांगनाओं के चित्रण द्वारा कवि ने नृत्य-वाद्य के मनोहर समन्वय को प्रस्तुत किया है। जल पर संतरण करती हुई अप्सराओं के करतलों द्वारा क्रमशः जल पर किए जा रहे आघात के कारण मृदंग की गंभीर ध्वनि उत्पन्न हो रही है और कम्पनशील उनके पयोधर नृत्य की शोभा को धारण कर रहे हैं।

शृंगार तथा तपश्चर्या के साथ भारवि ने युद्ध का भी अत्यन्त प्रभावोत्पादक दृश्य प्रदर्शित किया है। यद्ध के चित्रांकन में भी कवि पूर्ण कुशल हैं और उनका महाकाव्य किरातार्जुनीय तो युद्धप्रधान है ही। इस दृश्य को कवि ने अपनी कविता में साकार कर दिया है। मल्लयुद्ध के निरूपण में किरात के वक्षस्थल पर अर्जुन द्वारा किए गए मुष्टिप्रहारों की ध्वनि पाठक को सुनाई पड़ती है। नादानुकृति का यह सुन्दर निदर्शन है-

उन्मज्जन्मकर इवामरापगाया वेगेन प्रतिमुखमेत्य बाणनद्याः।

गाण्डीवी कनकशिलातलं भुजाभ्यामाजघ्ने विषमविलोचनस्य वक्षः।।

शृंगार निरूपण में कोमल तथा दीर्घसमासरहित पदावली का प्रयोग करने वाले भारवि ने यहाँ युद्ध-चित्रण में ओजस्वी तथा कठिन पदावली का प्रयोग किया है। इस प्रकार कवि प्रसंगानुकूल पदावली का प्रयोग करने में कुशल हैं।

भाषा पर भारवि का पूर्ण अधिकार है और इसी कारण अपने भावों, कल्पनाओं, अनुभूतियों को काव्य में सरस एवं हृदयावर्जक रूप में अभिव्यक्त करने तथा उनको साकार रूप प्रदान करने में

कवि सफल हुआ है। इस अधिकार की पराकाष्ठा का दिग्दर्शन चित्रबन्ध में होता है। यद्यपि चित्रबन्ध निबन्धन को काव्य की दृष्टि से उत्तम नहीं स्वीकार किया गया है तथापि इसके माध्यम से कवि के भाषा अधिकार एवं पाण्डित्य का प्रकाशन सुन्दर रूप में हुआ है। भारवि के समय इस विशिष्ट चित्रबन्ध पद्धति का प्रचलन हो रहा था और प्रमुख रूप से कवि स्वयं ही इस अलंकृत काव्यशैली का प्रवर्तक है। इस कला में वह स्वयं सिद्धहस्त है और इस नूतन शैली की उद्भावना करके उत्तरकालीन कवियों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। काव्यरचना को एक नवीन दिशा प्रदान की है। इस कला में कवि अपने समय का प्रतिनिधि कवि है और चमत्कार विशिष्ट इस रचनापद्धति की ओर उत्तरवर्ती कवियों को प्रेरित किया है। इस काव्यशैली के कारण भारवि का काव्य क्लिष्ट हो गया है और भावनापक्ष की अप्रधानता तथा कलापक्ष की प्रधानता हो गई है।